राजस्थान पत्रिका

छोटे पशुपालकों की है पहली पसंद...

सिरोही नस्ल बनी आजीविका का सहारा

कम खर्च में अधिक मुनाफा

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

टोंक. छोटे पशुपालकों के लिए सिरोही नस्ल की बकरी आजीविका का बड़ा जरिया साबित हो रहा है। छोटे पशुपालक कम खर्च में अधिक मुनाफा ले रहे हैं।

हालांकि बड़े पशुपालक गाय व भैंस के पालन से अधिक मुनाफा कमा रहे हैं, लेकिन अब छोटे पशुपालक भी उनसे कहीं पीछे नहीं है। प्रदेश के कई छोटे पशुपालकों ने ने तो डेयरी भी लगा ली है।

ऐसे में घर के दूध व आमदनी के अतिरिक्त खर्च निकालने के लिए उनके पास सिरोही नस्ल की बकरी से अच्छा कोई विकल्प नहीं है। ग्रामीण क्षेत्र के पशुपालक इन्हें खेत व चरागाह में चराकर इनसे दूध व मांस भी ले रहे हैं। इनके मेमने ताकतवर होने से महज 6 महीने बाद ही मांस के रूप में अच्छी आमदनी दे देते हैं। इन सबका खुलासा टोंक जिले के केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर के वैज्ञानिकों ने किया है।

सुधर रही है आर्थिक स्थिति

सभी मौसम को सहन कर लेती है

प्रदेश की जलवायु एवं भौगोलिक क्षेत्र में ये बकरियां सीमांत, छोटे किसानों, ग्रामीण महिलाओं और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की आजीविका का मुख्य स्रोत है। बकरी पालन सामान्यतः शून्य लागत का व्यवसाय है। इसका कारण बकरियां आमतौर पर बंजर भूमि, सड़क किनारे, नहर की पटरियों, पड़त जमीन तथा चरागाहों पर पलती व बढ़ती हैं। जो किसान साधनों के अभाव में गाय व भैंस जैसे बड़े खर्चीले पशुओं को नहीं पाल सकते, उनके लिए बकरी पालन कम खर्चीला व अधिक लाभकारी होने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए वरदान साबित हुआ है। इस कारण बकरी को 'दीन-हीन की गाय' भी कहा जाता है।

प्रमुख नस्ल में है शामिल

देश की बकरियों की प्रमुख नस्लों में सिरोही नस्ल की बकरी शामिल है। ये देश के उत्तरी-पश्चिमी क्षेत्र की जानी पहचानी नस्ल है। इसका उद्गम स्थान राजस्थान के सिरोही जिले से माना है। यहां से इस नस्ल की बकरियां राज्य के अर्द्धशुष्क क्षेत्र, अरावली पहाड़ियों, मध्य व दक्षिणी क्षेत्र में फैल गई है। यह नस्ल दूध व मांस के लिए पाली जाती है। औसतन 180 दिनों के दुग्धकाल में 140 लीटर तक दूध दे देती है। इनका वजन 30 किलो तक पहुंच जाता है।

निर्धन पशुपालक के लिए लाभदायक

सिरोही नस्ल की बकरी के पालने पर ज्यादा खर्च नहीं करना पड़ता। ये निर्धन पशु पालकों के लिए लाभदायक है।

डॉ. अरुण कुमार, वैज्ञानिक, केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर।